प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना तथा व्याकरणिक नियम होते हैं| जिसमें वह भाषा गठित होती है| तुलनात्मक तथा व्यतिरेकी अध्ययन में ध्वनि, रूप, वाक्य आदि स्तर पर भाषाओं के बीच पाई जाने वाली समानताओं और असमानताओं की खोज की जाती है जिसमें दो भाषाओं की व्यवस्था को समझने में सहायता मिलती है | वाक्य में क्रिया का स्थान केंद्रीय होता है | क्रियारूप से वाक्य में स्थित लिंग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य, पक्ष और वृत्ति आदि व्याकरणिक सूचनाएँ मिलती हैं। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो विभिन्न व्याकरणिक सूचनाओं के लिए अलग-अलग प्रत्यय या सहायक क्रियाएँ जुड़ती है | इस दृष्टि से यदि संस्कृत और हिंदी भाषा के व्याकरण को देखा जाए तो इन भाषाओं की अपनी- अपनी भिन्न प्रकृति है, उनके अपने व्याकरणिक नियम हैं | इसलिए दोनों भाषाओं की क्रिया संरचना तथा अर्थ संरचना, काल, वाच्य व्यवस्था में पर्याप्त अंतर है | इसको हम उनके क्रियारूपों के आधार पर समझ सकते हैं|

संस्कृत से हिंदी भाषा का विकास हुआ है, लेकिन उनके संरचना में बहुधा अंतर हैं | उन अंतरों को व्यतिरेकी विश्लेषण के द्वारा ज्ञात किया जा सकता है | संस्कृत, हिंदी के क्रियाओं में काल (समय) दोनों में कुछ समानता है लेकिन उनके भेदों और उपभेदों में बहुधा अंतर है | दोनों भाषाओं में वाक्य संरचना, अर्थ संरचना के स्तरों में परिवर्तन मिलता है संस्कृत व्याकरण में आठ विभक्तियाँ 'सुप्' के स्थान पर शब्दों के साथ जुड़ कर आते हैं, परंतु हिंदी में उनके स्थान पर स्वतंत्र कारक 'परसर्ग' चिन्हों का प्रयोग होता हैं |

संस्कृत में तिङन्त क्रियारूप तीनों लिंगों के लिए एक समान रूप से चलती है, परंतु हिंदी व्याकरण में ऐसा नहीं है | संस्कृत में कर्म फल भोक्ता के आधार पर दो पद मिलते हैं **जैसे** – आत्मनेपद और परस्मैपद | हिंदी के कुछ वाक्यों में देखा गया कि जिनमें काल संबंधित भ्रम होता है| **जैसे-** वर्तमान काल के सूचक में वाक्य 'सूरज पूरब से निकलता है|' 'वह प्रतिदिन सड़क पर टहलता है' ऐसे वाक्य

प्राय हिंदी में समस्या उत्पन्न करते दिखाई पड़ते हैं | कि ऐसे वाक्य का प्रयोग किस काल तथा किस विभक्ति और वचन में प्रयोग किया जाए |

संस्कृत क्रियापदों में देखा गया कि क्रियापदों में परिवर्तन होने पर भी अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है| जैसे- वृक्षात् पत्राणि पतन्ति| पतन्ति वृक्षात् पत्राणि | जबकि हिंदी भाषा के व्याकरण में वाक्य परिवर्तन होने पर भी अर्थ में परिवर्तन हो जाता है | संस्कृत में कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं, जो अकर्मक से सकर्मक हो जाती है | जैसे– नद्या वहति | भृत्यम् भारं वहति | लेकिन हिंदी भाषा में ऐसा बहुधा कम मिलता है | वाक्य में रचना की अहम् भूमिका होती है अर्थात् क्रिया ही वाक्य का केंद्र बिंदु होता है जिससे किसी घटना का किसी काल बिंदु विशेष पर घटित होने की सूचना मिलती है |

क्रिया के विभिन्न रूपों द्वारा क्रिया की आंतरिक संरचना का पता चलता है जिससे व्याकरणिक सूचनाओं की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है| वाक्य में क्रिया का संबंध व्याकरणिक कोटियों से व्यक्त होता है| क्रिया धातुओं से बनती है धातु के साथ 'सुप, तिङ्, कृत, तद्धित' आदि प्रत्यय लगते हैं जिससे क्रिया के मूल रूप में परिवर्तन उत्पन्न होता है | यह विकार व्याकरणिक कोटियों जैसे – लिंग, वचन, पुरुष, काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य के द्वारा होता है |

संस्कृत, हिंदी दोनों भाषाओं के क्रियारूप के भेद, उपभेद तथा उनकी व्यवस्था पर विचार किया गया हैं |

वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यतकाल इन तीनों कालों की क्रिया पूर्णता और अपूर्णता के अधार पर उनके अनेक भेद और उपभेद किए गए हैं | संस्कृत क्रियाओं पर विचार करते समय सर्वप्रथम उनके अतिनिकट संबंध रखने वाले क्रियाओं और लकारों का उल्लेख किया गया है|

वाक्य में क्रिया पद का कथन दो रूपों में होता है – सकर्मक और अकर्मक | जिन क्रियापदों के साथ 'कर्म' का योग नहीं होता वे 'अकर्मक' क्रियापद होते हैं | **जैसे** – होना, रहना, सोना आदि | और

जिन क्रियापदों के साथ 'कर्मकारक' का योग रहता है, वे 'सकर्मक' क्रियापद होते हैं | जैसे – खाना, पढ़ना, लिखना आदि |

इसप्रकार दोनों क्रियाओं का वर्णन सार्थक और निरर्थक अर्थों में किया जाता है |

दोनों भाषाओं अर्थात् संस्कृत, हिंदी क्रियारूपों में जो समानता और असमानता मिली है उनका विवरण उक्त अध्याय में किया गया है |

उपसंहार में प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में जो कार्य किए गए है उनका संक्षेप में वर्णन किया गया है |

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कम्प्यूटर के अविष्कार के बाद से ही कम्प्यूटर तकनीकी का प्रयोग हर क्षेत्र में किया जाने लगा है जिससे भाषा की व्याकरणिक सामग्री को संपादित कर एक व्याकरणिक मॉडल तैयार किया जा सकता है, जिसका उपयोग प्राकृतिक भाषा संसाधन (N.L.P) में मशीन अनुवाद प्रणाली के विकास हेतु भाषा संबंधी विश्लेषण के लिए उपकरणों का विकास किया जा सकता है जिसमें मशीनी अनुवाद कार्य सफलता से किया जा सकता है| अत: प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध कार्य दोनों भाषाओं की काल, वाच्य व्यवस्था को समझने या समझाने की दिशा में एक प्रयास मात्र है | यह शोध कार्य भाषा शिक्षण, मशीनी अनुवाद के लिए तथा भविष्य में किए जाने वाले शोध कार्य के लिए भी सहायक हो सकता है |